श्री मेरुनन्दनोपाध्याय कृत
स्तव एवं स्तवन

- म. विनयसागर

श्री जिनभद्रसूरि ज्ञान भण्डार, जैसलमेर, प्रकरण पोथी पत्र संख्या ६७-६८ और ५६-५८ पर ये कृतियाँ अंकित हैं ।

इसके प्रणेता श्री मेरुनन्दनोपाध्याय हैं जो कि श्री जिनभद्रसूरि के शिष्यरत्न थे । इनके जीवनवृत्त, जन्म, स्थान, दीक्षास्थान, दीक्षा संवत्, उपाध्याय पद संवत्, स्वर्गवास संवत् इत्यादि के सम्बन्ध में इतिहास मौन है। अतएव इस सम्बन्ध में कुछ भी लिखना भूलभरा ही होगा ।

इसमें प्रथम कृति श्री करहेटक पार्श्वनाथ स्तवन है । करहेटक का वर्तमान प्रसिद्ध नाम करहेडा पार्श्वना है, जो कि मेवाड़ में स्थिति है । इस करहेटक पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा सम्भवतः श्री जिनवर्द्धनसूरि ने करवाई थी । इसका जीर्णोद्धार भी लगभग पचास वर्ष पूर्व हो चुका है। राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थों में इसका नाम है ।

वसन्ततिलकावृत्त में रचित श्री करहेटक पार्श्वनाथ का स्तव है, जो कि पाँच पद्यों का है । इसमें करहेटक पार्श्वनाथ की स्तुति की गई है और उनका गुणवर्णन करते हुए कहा गया है कि कल्पवृक्षादि के समान यह मेरे घर में आ गया है । मुझे अब कुछ नहीं चाहिए, पापों का विनाश हो और मेरे हृदय में पार्श्वनाथ का निवास हो ।

दूसरी लघु कृति वीस विहरमाण स्तवन है । यह अपभ्रंश भाषा से प्रभावित मरुगुर्जर भाषा में रचा गया है । इस विहरमान स्तवन में जम्बूद्वीप के चार, धातकीखण्ड के आठ और पुष्करार्धद्वीप के आठ, इस प्रकार वीस विहरमान तीर्थङ्करों को नमस्कार किया गया है । सीमन्धरादि प्रत्येक तीर्थङ्कर का नामोल्लेख सहित गुण वर्णन करते हुए देहमान, वर्णनलञ्छन तथा चौंतीस अतिशय का भी उल्लेख किया गया है । अन्त में कृतिकार मेरुनन्दन ने अपना नाम दिया है । प्रस्तुत है यह दोनों कृतियाँ -

श्री करहेडक-पार्श्व-स्तवः

आनन्दभ(क)न्द-कुमुदाकरपूर्णचन्द्रं
विश्वत्रयीनयनशीतलभावचन्द्रम् ।
उद्दण्डचण्डमहिमारमया सनाथं
नित्यं नमामि करहेटक-पार्श्वनाथम् ॥१॥

नाथ ! त्वदीयमुखमण्डलमीक्षमाणो,
नायं जनो लवणिमापरपारमेति ।
पोतः प्रयन्नचलितोऽपि कदापि किं वा,
यं(यद्?) गम्यते चरमसागरपुष्करान्तम् ॥२॥

कान्तं तवेश नयनद्वितयं विलोक्य
कारुण्यपुण्यपयसा भरितं सरोवत् ।
मल्लोचने हरिणवच्चपले चिराय
सन्तोषपोषमयतां भवदावतस्ते ॥३॥

कल्पद्रुमो मम गृहाङ्गणमागतोऽद्य
चिन्तामणिः करतले चटितोऽद्य सद्यः ।
अद्याऽऽश्रिता मम पदौ सुरधेनुरेव
यद् भेटितोऽसि करहेटक-पार्श्वदेवः ॥४॥

सिद्धानि मेऽद्य सकलानि मनोमतानि,
पापानि पार्श्वजिन ! मे विलयं गतानि ।
याचे न किञ्चिदपरं भवतो गभीरं
ध्यानं तवाऽस्ति यदि मद्हृदि मे स धीरम्(?) ॥५॥

॥ इति करहेटक-श्रीपार्श्वस्तवनं कृतं श्री मेरुनन्दनोपाध्यायेन ॥

श्रीवीसविहरमाणस्तवनम्

भत्ति-सरोवरु ऊलटिउ जागिय हियइ जगीस ।
साहिब आणंदिहिं संथुणिमो विहरमाण जिण वीस ॥१॥

जंबुदीवि चत्तारि जिण धायईसंडिहिं अट्ठ ।
पुक्खरद्धि तह अट्ठ इम वीस नमउं गय-कट्ठ ॥२॥

सामिय करुणारसभरिय **सीमंधर** जिणराय ।
नियदंसणु दइ अमिय-समु पूरि मणोरह ताय ॥३॥

जाणउं ते सुकयत्थ जण जे तुह वयण सुणंति ।
धन्न ति जे तुह करि चरणु पामिय कम्म हणंति ॥४॥

पावपंक जगउद्धरण सधर **जुगंधर** सामि ।
भव सायर उत्तारि मम लीणउ छउं तुह नामि ॥५॥

मयणानलि संतावियउ वंछउं तुह पय छांह ।
नंदणवण सम **बाहुजिण** दइ अवलंबण बांह ॥६॥

जीव जोनि चउगइ भमिउ जिण चउरासी लक्ख ।
सिरि **सुबाह** हिव तुह सरणि आविउ दय करि रक्ख ॥७॥

गुण संकुल कमला निलय निम्मल सामि **सुजाय** ।
करउ केलि महु हियइसरि कमलोवम तुह पाय ॥८॥

सामि **सयंपहु** सो जयउ जसु पसाइ मयकुंभो ।
मोह महाभडु भंजि करि ऊभिज्जइ जस खंभो ॥९॥

गुण-काणण सिंचण सुघण **रिसहाणण** पय-रंगो ।
किम पामिय हुं रंजवियो निय मणे स सारंगो ॥१०॥

जे नमंति मनि खंति धरि**अणंतवीरिय** पय कंत ।
भोगवंति ते भविय जण सिव सुह-रिद्धि अणंत ॥११॥

पहु **सूरप्पहु** संघवणि नाण-किरण गण चूरि ।
पुन्नपयोहर उल्लसिय पाव तिमिर गय दूरि ॥१२॥

ते अजरामर हुंति जिण सिरि तित्थयर **विसाल** ।
सवणंजलि जेति तु पीयइं वाणिय अमिय-रसाल ॥१३॥

नाण महीधर वज्जवर पुद्धर वयरधर धीर ।
रक्खि रक्खि जिण **वज्जधर** रयणायर गंभीर ॥१४॥

तिय दंसणि वण-कुमुय जिम उल्लसिय मुणिविंद ।
नंद नंद आणंदमय **चंदाणण** जिणचंद ॥१५॥

निच्छइ हिव नहु संभवए भूरि भमणु संसारि ।
चंदबाहु जउ भमर जिम ठिउ मण-कमल मझारि ॥१६॥

काम-भुयंगम बल-दलणु नाममंतु मण रंगि ।
जे समरइं सिरि **भुयग जिण** रोग नहीं तिह अंगि ॥१७॥

रयणि दिवसु किम वीसरइं **ईसर** जिण तुह पाय ।
सासय-सुक्खहं कारणिहिं जह सेवइं सुरराय ॥१८॥

कवण सु होसिइ मुज्झ दिणु **नेमिप्पहु** नयणेहिं ।
जिणि जोइ सु रोमंचियउ थुणिसु महुर-वयणेहिं ॥१९॥

विस्ससेण जिण विसय-विस लहरिउ अम्ह सरीरो ।
निय संगम पीयूष-रसि-छंटिय करि वयधीरो ॥२०॥

कलि कलमल-नासण सलिल महिमालउ गमह भद्द ।
निय सेवय महु देहि पहो सिव मंगल **महभद्द** ॥२१॥

सुर नर तिरि संसय विसर देसण सद्विहरंतो ।
समवसरण भूसणु जयउ **देवेसरु** अरुहंतो ॥२२॥

तह मंदिर अंगणि रमइं सिद्धि बुद्धि जस रिद्धि ।
जे तिसंउ झायंति मणि तित्थेसरु जस रिद्धि ॥२३॥

देह माणि धणु पंचसय सवि जिण कंचण-वन्न ।
चउतीसइ अइसय सहिय वसहंकिय सिरि-पुन्न ॥२४॥

सुरतरु सुंदरु इय थुणिय विहरमाण जिण सार ।
वसउ **मेरुनंदणिहिं** जिम महु मणि सुह फलकार ॥२५॥

॥ इति श्री वीसविहरमाण स्तवनं ॥